ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

भूमंडलीकरण में रोजगार से जुडी भाषाएं ही रहेगी जीवित- प्रो. सूरज पालीवाल

वर्धा दि. 13 जनवरी 2012: भूमंडीकरण के दौर के आने से भाषाएं नष्ट हो रही है। ऐसे में जब तक भाषाओं में रोजगार नहीं मिल पाता जब तक भाषाओं के लिए जीवित रखने का संकट बरकरार रहेगा। हिंदी पर भी यही संकट और चुनौति है कि हम उसे किस प्रकार रोजगार की भाषा बनाकर विश्वभाषा के रूप में स्थापित कर सकते है। उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता व सुविख्यात आलोचक प्रो. सूरज पालीवाल ने विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 'विश्वभाषा के रूप में हिंदी' विषय पर आयोजित चर्चा में रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. ए. अरविंदाक्षन ने की। इस अवसर पर संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल कुमार राय प्रमुख वक्ता के रूप में मंचासीन थे।

विवि के समता भवन में स्वामी सहजानंद सरस्वती संग्रहालय में आयोजित परिचर्चा में प्रो. पालीवाल ने नागपुर में सन 1975 में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का जिक्र करते हुए कहा कि इसी सम्मेलन में हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की रूपरेखा रखी गयी थी। उन्होंने कहा कि विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिंदी दुसरे स्थान पर है। हमें पहला स्थान पाने के लिए हिंदी को आभूषणप्रियता के बजाए मन से स्वीकार करना होगा। मीडिया और हिंदी का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि आज का मीडिया हिंदी भाषा को बिगाड़ रहा है और वह भूल गया है कि भाषा बनाना भी हमारा काम है। उन्होंने कहा कि लोक भाषा का इस्तेमाल किए बगैर हम हिंदी को शक्तिशाली नहीं बना पाएंगे।

संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल कुमार राय ने कहा कि हिंदी को विश्वभाषा बनाने का प्रयास गांधी जी के अहिंसा एवं शांति के संदेश को विश्वभर में फैलाने का प्रयास है। उन्होनें कहा कि भाषा की प्राथमिकता सिध्द करने बगैर वह प्रचारित नहीं होगी। भाषा विस्तार के लिए लोक व व्यवहार से जोड़ना होगा और विश्वभाषा बनाने के लिए हिंदी को शुध्दतावाद से ऊपर उठना होगा। उन्होंने कहा कि मीडिया में प्रयुक्त होने वाली हिंग्लिश असल में हिंदी के आधुनिकीकरण की भाषा है। अपने अध्यक्षीय उदबोधन में प्रतिकुलपति प्रो. अरविंदाक्षन ने कहा कि देश के विकास पर ही भाषाओं का विकास निर्भर है। उन्होंने कहा कि अपने-अपने स्थान पर सभी भाषाएं मुख्य हैं। हमें भारतीय होकर इस दृष्टि से सोच-विचार करना होगा। उन्होने कहा कि हिंदीतर भाषी लोग हिंदी के बारे में क्या सोचते है, इसपर उनकी राय ली जानी चाहिए। इस अवसर पर विवि के परामर्शदाता प्रो. एस. कुमार ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन हिंदी अधिकारी राजेश यादव ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के सहायक प्रोफेसर डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी ने किया। इस अवसर पर शोधार्थी विद्यार्थी तथा अध्यापक एवं कर्मी उपस्थित थे।

बी एस मिरगे

जनसंपर्क अधिकारी